बनास जन

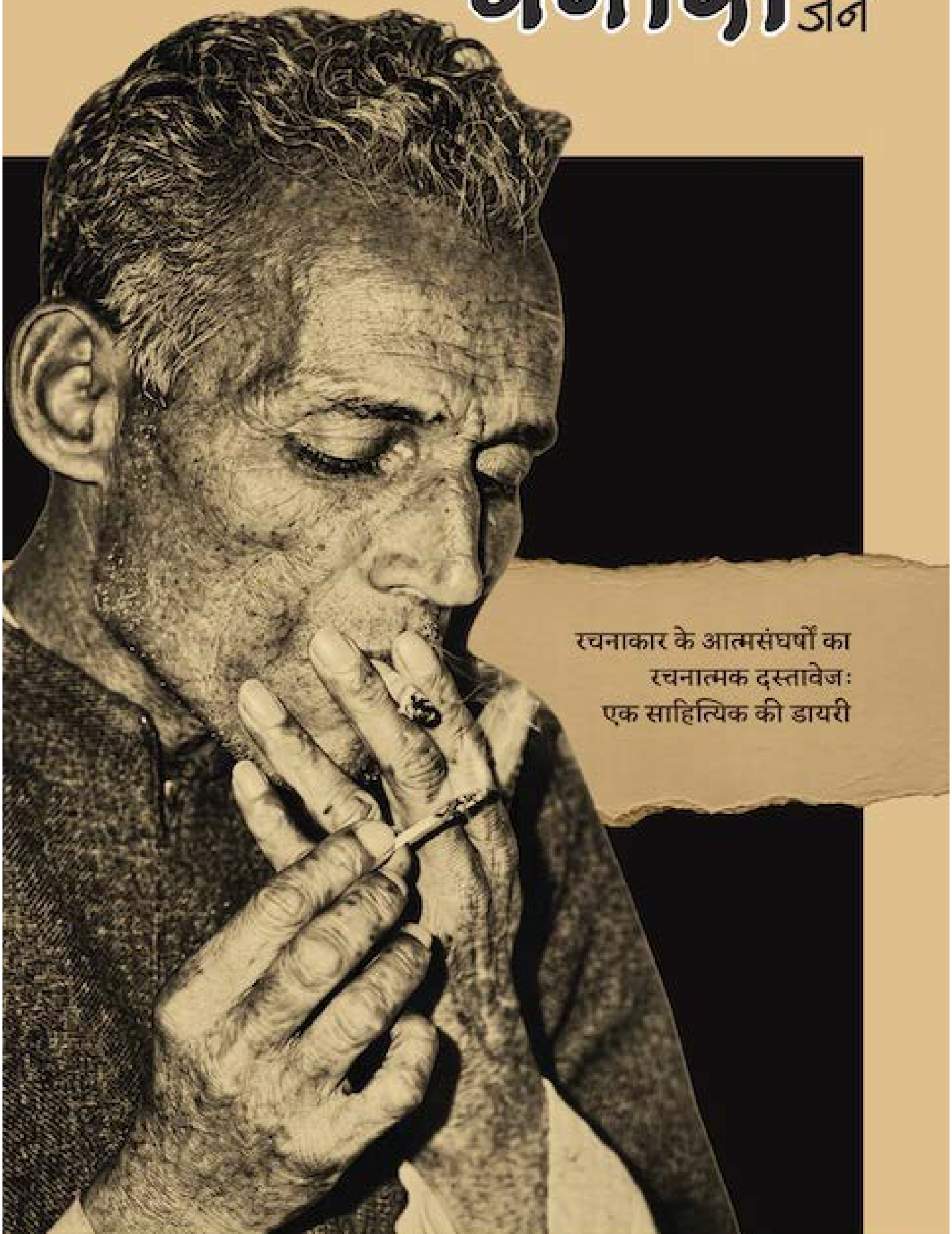

रचनाकार के आत्मसंघर्षों का
रचनात्मक दस्तावेज:
एक साहित्यिक की डायरी

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

रचनाकार के आत्मसंघर्षों का रचनात्मक दस्तावेज : एक साहित्यिक की डायरी

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

आवरण : निकिता त्रिपाठी

सहयोग राशि : 50 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–80 रुपये
100रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–130 रुपये
7000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
12,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
व्हाट्सएप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और सचदेवा आफसेट प्रिंटर्स, बी-39, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात	4
परिचय	5
आत्मसंघर्ष और एक साहित्यिक की डायरी	7
रचना-प्रक्रिया का प्रश्न	33
संदर्भ ग्रंथ सूची	75

अपनी बात

मुक्तिबोध की प्रसिद्ध कृति 'एक साहित्यिक की डायरी' पर युवा अध्येता अनूप कुमार बाली के इस लम्बे विनिबंध को विशेष अंक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इस विशेषांक का एक प्रसंग यह भी है कि यह नवलकिशोर स्मृति सम्मान अंक के रूप में आ रहा है।

हिन्दी साहित्य और संस्कृति की पत्रिका 'बनास जन' ने विख्यात आलोचक प्रो. नवल किशोर की स्मृति में आलोचना सम्मान प्रदान करने का निर्णय लिया था। वर्ष 2024 से प्रारम्भ यह सम्मान पहली बार बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की युवा अध्येता निवेदिता प्रसाद को उनके विनिबंध 'नजीर अकबराबादी का महत्त्व' पर तथा वर्ष 2025 के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के युवा अध्येता असीम अग्रवाल को उनके विनिबंध 'शैलेश मटियानी की कहानियाँ : संवेदना के विविध पक्ष' पर दिया गया था। वर्ष 2026 के लिए यह सम्मान जामिया मिल्लिया इस्लामिया के युवा अध्येता डॉ. अनूप कुमार बाली को उनके विनिबंध 'एक रचनाकार के आत्मसंघर्षों का रचनात्मक दस्तावेज : एक साहित्यिक की डायरी और रचना-प्रक्रिया का प्रश्न' पर दिया जा रहा है। सम्मान के लिए गठित निर्णायक समिति के सदस्यों डॉ. सत्यनारायण व्यास (चित्तौड़गढ़), प्रो. माधव हाड़ा (उदयपुर) और डॉ. हिमांशु पंड्या (रानीवाड़ा) ने सर्वसम्मति से अनूप कुमार बाली की पांडुलिपि का चयन किया। सम्प्रति दिल्ली के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय जामिया मिल्लिया इस्लामिया से हिंदी साहित्य में पीएच डी कर रहे डॉ. अनूप कुमार बाली आम्बेडकर विश्वविद्यालय से पहली पीएच डी कर चुके हैं। बाली का जन्म 4 अक्टूबर 1990 को दिल्ली में हुआ था। दीनदयाल उपाध्याय कालेज, दिल्ली से स्नातक तथा आम्बेडकर विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा पूरी की।

मुक्तिबोध की डायरी पर उनके विनिबंध पर अपनी संस्तुति में डॉ. सत्यनारायण व्यास ने कहा कि आधुनिक हिन्दी कविता के सबसे प्रमुख मुक्तिबोध की डायरी पर बाली का अध्ययन इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है कि यह कवि की रचना प्रक्रिया को व्यापकता और गहराई से विवेचित करता है। साथ ही रचना प्रक्रिया जैसे जटिल और गहन विषय पर भी युवा अध्येता का विश्लेषण उनके सामर्थ्य को उद्घाटित करता है कि आलोचना में उनकी रुचि कितनी गंभीर है। प्रो. हाड़ा ने अपनी संस्तुति में कहा कि मुक्तिबोध अपनी रचना प्रक्रिया को लेकर हिंदी में सबसे अधिक सचेत साहित्यकार थे। उनकी साहित्यिक डायरी में उनकी रचना से संबंधित आत्म प्रक्रिया के मोड़-पड़ाव और द्वंद्व-तनाव साफ दिखाई पड़ते हैं। बाली का विनिबंध इनको समझने का सर्वथा नया उपक्रम है। डॉ. हिमांशु पंड्या ने कहा कि अनूप बाली का आलेख गजानन माधव मुक्तिबोध के निबंध संग्रह 'एक साहित्यिक की डायरी' का सुदीर्घ विश्लेषण करते हुए उनके आत्मसंघर्ष के व्यापक राजनीतिक निहितार्थों को खोलता है। उन्होंने कहा कि बाली का अध्ययन और विश्लेषण मुक्तिबोध के आत्मसंघर्ष को अधिक समग्रता से हमारे सामने लाते हैं। ज्ञान, विचारधारा और वर्चस्व के अन्तर्सम्बन्धों का उनका विश्लेषण विचारोत्तेजक और नई बहस का उत्प्रेरक है।

• • •

हिन्दी साहित्य के संसार में मुक्तिबोध एक अनिवार्य नाम हैं जिन्होंने कविता और काव्य चिंतन के क्षेत्र में मौलिक योगदान किया है। उनकी कृति 'एक साहित्यिक की डायरी' कविता आऊर साहित्य का गहरा एवं नवोन्मेषी चिंतन है। अपने प्रकाशन की आधी सदी के बाद भी इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है और नयी पीढ़ी को भी यह बहस के लिए प्रेरित करती है।

आशा है मुक्तिबोध की अमर कृति पर केंद्रित यह अंक पाठकों को पसंद आएगा। निर्णायकों का आभार और अनूप जी को हार्दिक बधाई।

पल्लव